अंतरा-शब्दशक्ति

जादू की छड़ी

बाल कविता संग्रह

आस्था दीपाली

जादू की छड़ी

(बाल कविता संग्रह)

आस्था दीपाली

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-85-8

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- आस्था दीपाली
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Jadu ki chadi by Aastha Dipali

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

नन्ही कलम से

मेरा बचपन नाना नानी के प्यार भरे माहौल में बीता। मेरी नन्ही उंगलियों में नानाजी ने कलम थमाई तो नानीजी ने उनमें शब्द और एहसास के रंग भरे। संगीत और साहित्य की गोद में पलने के कारण मुझमें दोनों के प्रति अभिरुचि जागृत हुई और मेरे बाल मन ने अपने अनुभवों और भावनाओं को छोटे शब्दों में ढालने का प्रयास किया। साथ ही मैंने कथक नृत्य एवं शास्त्रीय संगीत में भी प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रभाकर किया। माता पिता एवं गुरुजनों का जीवन के हर पथ पर सदैव मार्गदर्शन मिलता रहा, अतः मैं कई प्रतियोगिताओं में भाग लेती रही और पुरस्कार प्राप्त करती रही। मैंने स्काउट गाइड में भी राज्य पुरस्कार प्राप्त किया। बचपन से प्रकृति रिश्ते परिवार देश सपने आदि विषय मुझे लुभाते रहे और मैं इन्ही पर केंद्रित अपनी रचनाएँ गढ़ती रही जो कि विभिन्न अखबारों और पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही। जूनियर जागरण, हिंदुस्तान, बाल भास्कर, बाल प्रभात आदि इनमें प्रमुख हैं। ये सभी रचनाएँ वर्ग पहली से लेकर दसवीं तक की हैं। हम बच्चों की नज़र में ये दुनिया बेहद खूबसूरत दिखती है जिसमें सभी प्यार और अपनत्व देने वाले रिश्ते होते हैं और जहां भी कुछ गड़बड़ होती है, वे जादू की छड़ी घुमाकर सब कुछ ठीक कर देते हैं। मेरे लिए मेरी नानी और मेरी मम्मी ही वे जादूगर हैं, वे परी रानियां हैं जो मेरे हर दुख को खुशी में बदल देती हैं। मेरी माँ ने मुझे हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का हौसला दिया तो मेरे पिता और भाई ने अपने स्नेह से मुझमे आत्मविश्वास का संचार किया। मैं कृतज्ञ हूँ उस परमात्मा की जिन्होंने मुझे ऐसा परिवार दिया। यह पुस्तक मैं अपने नानाजी और नानीजी को समर्पित करती हूँ जो मेरे प्रेरणास्त्रोत हैं। आशा है आप सभी का स्नेह इन रचनाओं को मिलेगा।

आस्था दीपाली

समाचार पत्रों में आस्था दीपाली

बाल-कविताएं

तोता

हरे रंग का है तोता
मिट्ठू-मिट्ठू है बोलता
हरी-हरी मिर्च है खाता
सबके मन को खूब लुभाता

नया साल

नये साल में प्रण करें
नयी ऊंचाइयों को हम छूएं
हर क्षेत्र में नाम कमाएं
भारत को अव्वल बनायें

आस्था दीपाली
केन्द्रीय विद्यालय ,मुजफ्फरपुर

लंदन ओलंपिक

गगन चमका आकाश में
मारा निशाने पे तमगा,
साइना बैडमिंटन के शीर्ष
पर कैसा था वो लम्हा।
विश्व इतिहास के
मुक्केबाजी में मैरी कॉम का
जलवा,
योगेश्वर ने पहलवानों की
हालत कर दी खस्ता।
आखिर सुशील क्यों पीछे
रहते सबको किया चलता,
विजय ने तो जीतकर पूरा
कर लिया सपना।।

आस्था दीपाली
वर्ग - अष्टम्
केंद्रीय विद्यालय
मुजफ्फरपुर (द्वितीय पाली)

जूनियर जागरण

शुक्रवार, 10 अगस्त 2012 3

कविताएं

चाहे विभिन्न खेल में,
अपना झंडा गाड़ रहा है।
देखो भारत जाग रहा है।।
सत्य अहिंसा के पथ पर चलता,
मैत्री सदभाव से सबसे मिलता,
लोकतंत्र को मजबूती देता,
आतंकवाद से लड़ रहा है।
देखो भारत जाग रहा है।।
इस पर हम सब गर्व करें,
पहले भारतवासी बनें,
इसके सम्मान की रक्षा के लिए
अपना सर्वस्व न्योछावरन करें।
देखो भारत जाग रहा है।।

-आस्था दीपाली, कक्षा
अष्टम (ब), विद्यालय केंद्रीय
विद्यालय (द्वितीय पाली)

कविता

बेटी

बेटी हूं मैं प्यारी सी
नटखट और दुलारी सी,
तेरी बगिया की मैं फूल
ना चुभाओ तुम मुझको शूल
मैं भी जीना चाहती हूं,
आकाश को छूना चाहती हूं
भइया के साथ लिखना-पढ़ना
खेलना-कूदना चाहती हूं।
बेटी से गुलशन जग सारा
बेटी से बनता है घर न्यारा
अपना लो बेटी को तुम
रखेगी वो ध्यान तुम्हारा ।।

लाडली बेटी

प्यार के पंखों पर
ज्ञान की तरंगो पर
मुसीबतों को झेलते
मुश्किलों को ठेलते
हौसले बढ़ाते हंसते-दुलारते
बेटों से भी बढ़कर
मुझको है चाहते
वह है मेरे मम्मी-पापा
एक्टिव, स्मार्ट, फ्रेंडली
और मैं हूं उनकी प्यारी
दुलारी लाडली बेटी

- आस्था दीपाली
कक्षा - नवम् (बी)
स्कूल - केंद्रीय विद्यालय
मुजफ्फरपुर (द्वितीय पाली)

मेरा भइया

भइया मेरा प्यारा-प्यारा
लगता सबसे न्यारा-न्यारा
पढ़ना उसे सिखाऊंगी,
झूला उसे झुलाऊंगी,
जब कोई उसको मारेगा
तुरंत मैं उसे बचाऊंगी

आस्था दीपाली,वर्ग-दो केन्द्रीय विद्यालय

ज्ञानेन्द्रिय

पुतली नचाकर आंखें बोली,
मैं ही देखती सारा संसार।
सुनकर कान फड़क कर बोला,
रहूं नहीं तो सब बेकार।
गहरी सांस भर बोली नाक,
सूंघने में मैं आता हूं काम।
तो जीभ चटोरी बोल पड़ी,
स्वाद बताके बनूं महान।
त्वचा ने भी रोब जमाया,
स्पर्श ज्ञान का आभाष कराया
सबने एक-दूजे की मानी बात,
झगड़ा छोड़ मिलाया हाथ।

कोमल कुमारी, वर्ग-4
एम्बीसन पब्लिक स्कूल, कुढ़नी

इंदिरा गांधी

धायं-धायं चलती रहीं
गोलियों की बौधार
चमकता सितारा डूब गया
मातृभूमि के पार।
शून्य ही शून्य एक दर्शन
अश्रुओं में जन मानस विकल
'प्रगति' के खेतों में उपजा
हिंसा जैसी फसल।
जन-जन की थी आस किरण तुम
विश्व शांति के प्रतिमान
शिथिल हुआ था आतंकवाद
तेरी धर्म की निरपेक्ष तान।
तेरे समाजवाद से खेल रहा
वैश्वीकरण बन कर अभिशाप
जनसंख्या विस्फोट भी झेल रहा
गरीबों का संताप।
अखंड भारत की तेजो राशिने
कैसी-कैसी व्यथा देखी
पुनर्जागरण की कोख से
दूसरी कब इंदिरा पैदा होगी।

अमृता क्वीन, वर्ग-6
नार्थ प्वाइंट चिल्ड्रेन अकादमी

बापू मेरे कितने महान

बापू मेरे कितने महान
उनका करते हम गुणगान,
वे सत्य के मार्ग पर चलकर
उपदेश अहिंसा का देकर,
सब जीवों से मिलते एक समान।
बापू मेरे कितने महान,
कोई काम बड़ा न छोटा हो
हर हाथ में सूत और चरखा हो,
धर्म का सदा पालन हो
जुल्म कभी नहीं सहना हो
कर्मवीर हो बच्चे और जवान,
बापू मेरे कितने महान।

-आस्था दीपाली, वर्ग-9बी
केंद्रीय विद्यालय
दूसरी पाली, मुजफ्फरपुर।

जूनियर जागरण

कविता

केंद्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस)

पचास वर्षों से अनवरत, केवीएस ये कर रहा प्रयत्न,
खोया गौरव लौटाने का, स्वर्णिम इतिहास बनाने का।
केवीएस में मिलता सच्चा ज्ञान, संस्कार, अनुशासन
और सिद्धांत, इसके शिक्षक ज्ञानवान, प्रतिभाओं का
करते उत्थान। यूथ पार्लियामेंट, साइंस कांग्रेस द्वारा
ओलंपियाड, क्विज भाषण द्वारा, विज्ञान में नए प्रयोगों
द्वारा, बच्चों में यह ऊर्जा भरता। स्काउट गाइड की
ट्रेनिंग देकर, विविध खेलों का अभ्यास कराकर,
संगीत, नाटक, प्रदर्शनी कराकर, अपनी संस्कृति की
रक्षा करता। कम पैसे में उत्कृष्ट शिक्षा, हर बच्चे को
मिलती एक सी सुविधा, देश-विदेश में इसकी शाखा,
गुणवत्ता से नहीं कोई समझौता। हम सबको केवीएस
पर नाज, हर क्षण करता एक नया आगाज, योग्य
कुशलता का शंघनाद, भविष्य बनाता उज्ज्वल महान।

-आस्था दीपाली, कक्षा-दस
केंद्रीय विद्यालय, मुजफ्फरपुर
(द्वितीय पाली)

दैनिक जागरण

जूनियर जागरण

06 जुलाई, 2012

गुदगुदी

पिता

पिता की छात्र छाया में
सभी मुश्किल का हल मिलता,
उनके ज्ञान व आशीर्वाद से
मेरे हौसले को बल मिलता।

मेरे सपनों की उड़ान में
उनका भी विश्वास है,
उनके स्नेह व दुलार से
मेरा हर पल गुलजार है।

मेरा मार्गदर्शन करने में
वे पीछे कभी नहीं हटते,
मैं जब भी खोजती हूं उनको
मेरे साथ ही खड़े मिलते।

पिता! आप दुख की सुख की
मेरी भाषा सब जानते हैं,
मेरी हर छोटी-बड़ी
ख्वाहिशों को पहचानते हैं।

पिता आप दृढ़ चट्टान हैं
धैर्य की एक मिसाल हैं,
आप बने रहें यूं ही हम पर
आप ही हमारी मुस्कान हैं।

आस्था दीपाली
कक्षा: अष्टम "ब"
केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरपुर

चालाकी

कठिन

जूनियर जागरण

शुक्रवार, 22 मार्च 2013

बिहार दिवस

बढ़ा के बिहार का
मान और यश
आओ मनाएं बिहार दिवस हम।
शिक्षा का हम दीप जलाएं
अज्ञानता का तिमिर भगाएं
ज्ञान की लौ जले हर घर
आओ मनाएं बिहार दिवस हम।
लड़की भी पाए वो अधिकार
जो लड़के पाते अपने आप
बदले सोच, अपनी हर नजर
आओ मनाएं बिहार दिवस हम
बिहार बढ़े हर क्षेत्र में यूं
आंखे मलते रहे सब यूं
बिहार कहलाने में गर्व करें हम
आओ मनाएं बिहार दिवस हम।

-आस्था दीपाली, वर्ग-9
केंद्रीय विद्यालय, मुजफ्फरपुर।

जूनियर जागरण

शुक्रवार, 11 जनवरी 2013

कविता

ले संकल्प इस नववर्ष हम
नया सवेरा, नया है क्षण
नई जागृति जगाएं हम
नया बदलना है कुछ 'सिस्टम'
ले संकल्प इस नववर्ष हम।
मानवता के फूल खिले
दिल से दिल के तार जुड़े
छोड़ के नफरत-साजिश को
प्रेम के गीत तराने छिड़े
बुरा ना चाहें किसी का हम
ले संकल्प इस नववर्ष हम।।
अब न कोई 'गितिका' मरे
अब न कोई 'दामिनी' घुटे
बच्ची को पैदा करने में
अब न कोई माता डरे
अब न ये हिंसा सहेंगे हम
ले संकल्प इस नववर्ष हम।।
अब न शराब से घर उजड़े
न भ्रष्टाचार से देश हिले
ढाबे-कारखाने में पीसकर
बच्चे न विद्या को तरसे
हर बच्चा पढ़े और बने अफसर
ले संकल्प इस नववर्ष हम।।
धरती भी श्यामल हरित रहे
पशु-पक्षी भ्रमण किलोल करें
जल ऊर्जा बढ़े प्रदूषण घटे
स्वतंत्र हवा सुगंधित बहे
इस धरती की रक्षा करेंगे हम
ले संकल्प इस नव वर्ष हम।।

आस्था दीपाली, कक्षा - 8 बी
केंद्रीय स्कूल
मुजफ्फरपुर

अनुक्रमणिका

सरस्वती माँ	9
दुर्गा माता	10
प्यारी माँ	11
पिता	12
मेरी नानी	13
प्यारे नाना	14
मेरा भईया	15
वह हैं मेरे पापा मम्मी	16
बेटी	17
परी रानी	18
वीर बनो	19
बढ़ता भारत	20
बचाओ पर्यावरण	21
भारत का लंदन ओलंपिक	22
वतन तुझे पुकारता	23
क्यों	24
ले संकल्प इस नव वर्ष हम	25
गणतंत्र दिवस	26
बापू	27

केंद्रीय विद्यालय संगठन	28
बिहार दिवस	29
नया साल	30
कोयल रानी	31
कबूतर राजा	31
तोता	31
जादू की छड़ी	32
फूल	32
वर्षा रानी	32

सरस्वती माँ

सरस्वती माँ! हमें विद्या दो
अज्ञानता को दूर करो
अपनी कलाएँ हमें भी सिखाओ
जीवन संगीतमय बनाओ
मधुर मधुर हम वाणी बोले
और सभी के दिल को जीते
पढ़ लिखकर हम बन जाएं अच्छे
वरदान कुछ ऐसा दे दो हमें

दुर्गा माता

हे माँ तुझको नमन करूँ
शीश झुका कर विनय करूँ
तेरी पूजा पाठ न जानूँ
किस विधि माता तुझे रिझाऊँ
तेरी ममता की छाँव तले
दुख की कभी न धूप लगे
दया की तेरी बारिश में
श्रद्धा के मन मे भाव जगे
विविध कलाओं से परिपूर्ण
माता तेरा अनुपम रूप
भाव से मैं भक्ति करूँ
आस्था के फूल चढ़ाऊँ
अपना लो इस नादान भगत को
चरणों में शीश नवाऊँ।

प्यारी माँ

माँ तेरा है रूप निराला
सब रूपों में मन को भाता
माँ तू कितनी अच्छी है
मेरी प्यारी सहेली है
मन की बातें जानती है
हर पल तू मुस्काती है
गलती पे समझाती है
फिर भी हमे दुलारती है
हर दम हौसला बढ़ाती है
माँ तेरी सेवा करें खूब
अपनी ही गोद में रखना तुम।

पिता

पिता की छत्र छाया में
सभी मुश्किल का हल मिलता
उनके ज्ञान व आशीर्वाद से
हौसलों को मेरे बल मिलता
मेरे सपनों की उड़ान में
उनका भी विश्वास है
उनके स्नेह व दुलार से
मेरा हर पल गुलज़ार है
मार्गदर्शन मेरा करने में
पीछे वे कभी नहीं हटते
जब भी मैं खोजूँ उनको
पीछे खड़े ही मिलते
पिता आप दुख की सुख की
भाषा सब मेरी जानते हैं
मेरी हर छोटी बड़ी बातों को
ख्वाहिशों को पहचानते हैं
पिता आप दृढ़ चट्टान हैं
व्यक्तित्व आपका महान है
आप स्वस्थ रहें दीर्घायु हों
हम सबकी आप मुस्कान हैं।

मेरी नानी

मेरी नानी प्यारी नानी

सारे जग से न्यारी नानी

खाना मुझे खिलाती है
लोरी मुझे सुनाती है
जब मुझे डर लगता है
गोदी में तुरंत छुपाती है

प्यारे नाना

नाना मेरे प्यारे हैं
सारे जग से न्यारे हैं
गाना मुझे सुनाते हैं
हँसते और हँसाते हैं
घूमाने भी ले जाते हैं
मुझको खूब पढ़ाते हैं
जब बीमार मैं पड़ती हूँ
डॉक्टर से तुरंत दिखाते हैं

मेरा भईया

भईया मेरा प्यारा प्यारा
लगता सबसे न्यारा न्यारा
पढना उसे सिखाऊंगी
झूला उसे झूलाऊंगी
जब कोई उसको मारेगा
तुरंत मैं उसे बचाऊंगी

वह हैं मेरे पापा मम्मी

प्यार के पंखों पर
ज्ञान के तरंगों पर
मुसीबतों को झेलते
मुश्किलों को ठेलते
हौसला बढ़ाते
हँसते दुलारते
बेटों से बढ़कर
मुझको हैं चाहते
वह हैं मेरे पापा मम्मी
एक्टिव, स्मार्ट फ्रेंडली
और मैं हूँ उनकी प्यारी सी
आस्था दीपाली लाडली

बेटी

बेटी हूँ मैं प्यारी सी
नटखट और दुलारी सी
तेरी बगिया की मैं फूल
ना चुभाओ मुझको शूल
मैं भी चाहती हूँ जीना
आकाश को चाहूँ मैं छूना
भईया संग पढना लिखना
चाहूँ संग उनके चलना
बेटी से गुलशन जग सारा
बेटी से बनता घर न्यारा
बेटी को अपना लो तुम
सुंदर सपन सजा लो तुम

परी रानी

ऐ परी देश की शहज़ादी
मेरे सपनों में आओ
सुंदर सुंदर खेल खिलौने
मुझको भी दे जाओ
मैंने सुना है नानी से
तुम उन बच्चों से मिलती हो
जो प्यार सभी से करते हैं
कभी लड़ते न झगड़ते हैं
जो बड़ों का आदर करते हैं
और मदद सभी की करते हैं
जो होमवर्क करके जाते हैं
पढ़ने में मन लगाते हैं
जो अच्छे बच्चे होते हैं
और प्यार सभी का पाते हैं
मैं भी अच्छी बन जाऊंगी
आज जल्दी ही सो जाऊंगी
मेरे सपनों में आ जाना
प्यार मुझे भी दे जाना

वीर बनो

बच्चो तुम सब वीर बनो
कभी किसी से नही डरो
बाधाएँ तो आएँगी
सच है तुम्हें डराएँगी
कर्म पथ पर बढ़ते रहना
नई राह तुम गढ़ते रहना
तुम मन मे साहस धरो
बच्चो तुम सब वीर बनो

बढ़ता भारत

देखो भारत जाग रहा है।
गुलामी की जंजीर तोड़कर
अज्ञानता को छोड़कर
नफ़रत ईर्ष्या को मोड़कर
प्यार के बोल बांच रहा है
देखो भारत जाग रहा है।
हरित क्रांति अभियान चलाकर
दूध दही की नदियाँ बहाकर
जन जन को साक्षर बनाकर
शिखर की ओर भाग रहा है
देखो भारत जाग रहा है।
सूचना तकनीकि के क्षेत्र में
अस्त्र शस्त्र की रेल में
चाहे विभिन्न खेल में
झंडा अपना गाड़ रहा है
देखो भारत जाग रहा है।
सत्य अहिंसा पर चलते
मैत्री सद्भाव से मिलते
लोकतंत्र को मजबूती देते
आतंकियों पे दहाड़ रहा है
देखो भारत जाग रहा है।

बचाओ पर्यावरण

हरी भरी धरती हो अपनी
नीला सतरंगी अंबर
आओ देश के लोगों आओ
बचाओ पर्यावरण।
धरती भूकम्प से हिल रही
सुनामी लैला लील रही
कहीं बाढ़ तो कहीं सुखाड़
क्यूँ प्रकृति हमसे खीज रही
वन प्राणी सब सिमट रहे
समुद्री जीव सब बिलख रहे
ज़हर हवा में घोलकर
हम प्राण वायु को तरस रहे
काश प्रकृति को समझ पाएं
पेड़ पौधों से इसे सजाएं
संपदा इसकी प्रदूषित न कर
इस धरती को स्वर्ग बनाएं।

भारत का लंदन ओलंपिक

'गगन' चमका आकाश में
मारा निशाने पर तमगा
'साइना' बैडमिंटन के शीर्ष पर
कैसा था वो लम्हा
विश्व इतिहास के मुक्केबाजी में
'मैरी कॉम' का जलवा
'योगेश्वर' ने पहलवान की
हालत कर दी खस्ता
आखिर 'सुशील' क्यूँ पीछे रहते
सबको कर दिया चलता
'विजय' ने तो जीत कर
पूरा कर लिया सपना

वतन तुझे पुकारता

देश के जवान जाग
सरहद तुझे पुकारता
मातृभूमि की रक्षा को
वतन तुझे पुकारता
आज देश के दुश्मन ने
फिर से नज़र गड़ाई है
बारूद और तोपों की फौज
सीमा पर बढ़ाई है
फैलाई हैं अफवाहें
फिर से है आघात किया
आना मत उनकी बातों में
जिसने हमपे वार किया
हो माँ आखिर क्यूँ बेबस
जिसके करोड़ो लाल हों
जिसकी अस्मिता की रक्षा को
हर पल वे तैयार हों
उठो जवानों जागो आओ
देश पे अपना सर्वस्व लुटाओ

क्यों

असम से पंजाब तक
केरल से नैनीताल तक
हम एक हैं हम एक हैं
मिला अधिकार बोलने का
लिखने का पढ़ने का
कहीं भी आने जाने का
कोई भी धर्म अपनाने का
फिर नेता क्यूँ उकसाते हैं
जनप्रतिनिधि खुद को बताते हैं
करके प्रहार लोकतंत्र पर
सदन में शोर मचाते हैं
क्यों मीठा वे नही बोलते
संस्कृति सभ्यता को सहेजते
क्यों नही भारत की शक्ति को
इंसानियत से जोड़ते?

ले संकल्प इस नव वर्ष हम

नया सवेरा नया है क्षण
नई जागृति जगाएँ हम
नया बदलना है कुछ 'सिस्टम'
ले संकल्प इस नव वर्ष हम
मानवता के फूल खिले
दिल से दिल के तार जुड़े
छोड़ के नफ़रत साज़िश को
प्रेम के नए तराने छिड़े
बुरा न चाहे किसी का हम। ले संकल्प इस नव वर्ष हम
अब न कोई 'निर्भया' मरे
अब न कोई ' दामिनी' घुटे
बच्ची को पैदा करने में
अब न कोई माता डरे
अब न ये हिंसा सहेंगे हम। ले संकल्प इस नव वर्ष हम
अब न शराब से घर उजड़े
न भ्रष्टाचार से देश झुके
ढाबे कारखाने में पीसकर
बच्चे न शिक्षा को तरसे
हर बच्चा पढ़े बने अफसर। ले संकल्प इस नव वर्ष हम

गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस की बेला में
लगा तिरंगा लहराने
केसरिया और हरे रंग के
बीच लगा चक्र इठलाने
एक तरफ परेड का रेला है
सुंदर झांकी का मेला है
घुड़सवारी तोप हवाईजहाज का
देखो करतब और खेला है
देखो वीर बच्चे हाथी पर
साहस की कहानी कहते हैं
भारत माँ के सपूतों से
हम यही आशा तो करते हैं
हो विजयी विश्व मे देश हमारा
सत्य अहिंसा हमको प्यारा
दुश्मन न ललकार हमें
है विश्व शांति संदेश हमारा

बापू

बापू मेरे कितने महान
उनका करते हम गुणगान
वे सत्य के मार्ग पर चलकर
उपदेश अहिंसा का देकर
सब जीवों से मिलते एक समान
बापू मेरे कितने महान।
कोई काम बड़ा न छोटा हो
हर हाथ मे सूत और चरखा हो
धर्म का सदा ही पालन हो
जुल्म कभी नही सहना हो
कर्मवीर हो बच्चे और जवान
बापू मेरे कितने महान

केंद्रीय विद्यालय संगठन

पचास वर्षों से अनवरत
के. वी.एस कर रहा प्रयत्न
खोया गौरव लौटाने का
स्वर्णिम इतिहास बनाने का
इसमे मिलता सच्चा ज्ञान
संस्कार अनुशासन और सिद्धांत
इसके शिक्षक ज्ञानवान
प्रतिभा का करते उत्थान
यूथ पार्लियामेंट साइंस कांग्रेस से
ओलिंपियाड क्विज भाषण से
विज्ञान के नए प्रयोगों से
बच्चों में भरता नए नए ज्ञान
स्काउटिंग गाइडिंग की ट्रेनिंग देकर
विविध खेलों का अभ्यास कराकर
संगीत नाटक प्रदर्शनी से
संस्कृति का लेता संज्ञान
हम सबको के. वी. एस पर नाज़
हर क्षण करता यह नया आगाज़
योग्यता कुशलता का कर शंखनाद
भविष्य बनाता उज्ज्वल महान

बिहार दिवस

बढ़ा के बिहार का मान और यश
आओ मनाएं बिहार दिवस हम
शिक्षा का हम दीप जलाएं
अज्ञानता का तिमिर भगाएं
ज्ञान की लौ जले हर घर
आओ मनाएं बिहार दिवस हम
लड़की भी पाए वो अधिकार
जो लड़के पाते अपने आप
बदले सोच, अपनी हर नज़र
आओ मनाएं बिहार दिवस हम
बिहार बढ़े हर क्षेत्र में यों
आंखे मलते रहे सब ज्यों
बिहारी कहलाने में करे गर्व हम
आओ मनाएं बिहार दिवस हम।

नया साल

नया साल नई उमंगे
नई नई खुशियाँ नई तरंगे
नई आशाएँ, नए विचार
नया जोश नया विश्वास
आओ मिलकर प्रण करे
नई ऊंचाइयों को हम छूएँ
हर क्षेत्र में नाम कमाएँ
भारत को अव्वल बनाएं

कोयल रानी

कोयल रानी आओ
मीठे गीत सुनाओ
मेरा मन बहलाओ
मेरी दोस्त बन जाओ

कबूतर राजा

कबूतर राजा आ जा
चिट्ठी मेरी पहुंचा जा
देकर भैया को राखी
लड्डू बर्फी खिला जा

तोता

हरे रंग का है तोता
मिठ्ठू मिठ्ठू है बोलता
हरी हरी मिर्च है खाता
सबके मन को खूब लुभाता

जादू की छड़ी

जादू वाले आओ
जादू की छड़ी घुमाओ
रोते को हँसाओ
दुनिया सुंदर बनाओ

फूल

हम फूलों जैसे मुस्काएँ
मधुर मधुर खुशबू बिखराएँ
अपनी मीठी बातों से
सबके मन को खूब रिझाएँ

वर्षा रानी

वर्षा रानी आयी
भर भर पानी लायी
उसमें भीगे हम
खुशियों से भर गया मन

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - आस्था दीपाली

जन्म - 06 नवम्बर 1999, मुज़फ़्फरपुर (बिहार)

शिक्षा - बी.ए., हिन्दी (प्रतिष्ठा)

शिक्षण संस्थान - लेडी श्री राम कॉलेज फार वीमेन, नई दिल्ली

पता - के.69/4 मैदानगढ़ी रोड, छतरपुर, नई दिल्ली

संपर्क नं. - 8051614565

ई मेल - aasthadeepali909@gmail.com

प्रकाशन - जूनियर जागरण, हिन्दुस्तान, बाल भास्कर, बाल प्रभात आदि कई पत्रिकाओं एवं अखबारो में रचनाओं का प्रकाशन।

सम्मान - स्काउट एवं गाइड के लिए राज्य पुरस्कार।
- श्री सम्मान 2011, उद्‌भव कला सम्मान 2012, बिहार विकास रत्न अवार्ड 2012, दैनिक भास्कर प्रतिभा सम्मान 2016

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-85-8

मूल्य- 55/-